19 AUG 2019

दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्रथम प्रश्न-पत्र

(संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

DTVF/19 (N-M)–M–**H13/5**

Name: NAVEEN GAHLAWAT **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): HINDI **Reg. Number:** FP/[illegible] 79/710

Center & Date: M.K. [illegible]NAGAR **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 3503453

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xix) एक संगमकालीन स्थल

A Sangam site

(xx) एक नवपाषाणिक अधिवास स्थल

A neolithic habitat site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) प्राचीन भारत के इतिहास निर्माण में अवशेषों के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

Highlight the importance of relics in the construction of history of ancient India. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतिहास की जानकारी हेतु दो प्रकार के स्रोतों की मदद ली जाती है,

साक्ष्य
साहित्य — पुरातात्विक

पुरातात्विक स्रोतों में अवशेषों का विशेष महत्व है।

अवशेष हमें पाषाण काल से अंत तक की जानकारी तो प्रदान करते ही हैं साथ ही साहित्य साक्ष्यों की ~~[illegible]~~ सत्यता की पुष्टि भी करते हैं।

पुरापाषाण काल में मिले हथियारों औजारों से उस समय की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आर्थिक क्रियाओं का पता चलता है वहीं सिंधु सभ्यता में मिले अवशेष से नगर योजना, कला, लिपी इत्यादि बातों की पुष्टि होती है

वेदों से भी लोहे के प्रयोग वहाँ की कबीलों -जातियों की जानकारी मिलती है।

वहीं तक साहित्यिक स्रोतों की सत्यता की पुष्टि की बात है।

- साहित्य अशोक के राजप्रसाद की बात करता है तो इसकी पुष्टि उसके अवशेषों से होती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पिलनी रोम से मोने के आगमन पर शोक प्रकट करता है तो इसकी पुष्टि रोमन मोने के सिक्कों से हो जाती है।

अतः ~~साहित्य~~ के इतिहास के निर्माण में अवशेषों के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) "मथुरा कला केंद्र भारतीय तथा विदेशी मूल के विभिन्न सामाजिक समूहों की मांगों को पूरा करने के प्रति जागरूक था।" कथन की समीक्षा कीजिये। 20

"Mathura Kala Kendra was conscious of meeting the demands of various social groups of Indian and foreign origin." Overview the statement. 20

मथुरा कला का विकास 2AD मे माना जाता है जो मथुरा के आसपास के क्षेत्र मे थी। इसको मुख्य शासक कुषाणों व सामंतों द्वारा दिया गया। यह तीन धर्मों (बौद्ध, जैन, हिन्दू) तथा धर्मनिरपेक्ष दोनो ही से सम्बंधित थी।

बौद्ध धर्म इसमे बुद्ध का परिधान में बुद्ध मूर्ति भारी भरकम व अभय मुद्रा मे बैठे दिखाया गया है। मुद्रा के अतिरिक्त सिर मुंडा ढका हुआ है। मूर्तियों को गोल रूप मे बनाया, शरीर मोटा व परिधान पर सिलवटें दिखती है।

वही जैन धर्म

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

में भिक्षु व भिक्षुणियों के ध्यान-मग्न करती मूर्तियां तथा विदेशियों की मूर्तियां बनायी गयी है।

ब्राह्मण धर्म में शिव, लक्ष्मी, कार्तिकेय, इत्यादि देवताओं की मूर्तियों को बनाया गया है। सूर्य की मूर्ति रथ पर घुड़ी हुई, बलराम के सिर पर पगड़ी इत्यादि की मूर्तियां है

वहीं धर्मनिरपेक्ष स्वरूप में राजाओं व सामंतों की मूर्तियां भी बनायी है। जिनमें विम व कनिष्क की मूर्तियां प्रधान है।

इन प्रतिमाओं से पता चलता है कि लेकिन से प्रभावी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लगते है। ये अंतिम शासकों की वैधता स्थापित करने हेतु प्रयास लगता है क्योंकि कुषाण विदेशी थे।

अतः कुषाण कला भारतीय व विदेशी दोनों ही सामाजिक तत्वों की मांगों को पूरा करती प्रतीत होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) गुप्त साम्राज्य की सार्वभौमिकता पुनः स्थापित करने के लिये चंद्रगुप्त-II द्वारा अपनाई गई नीतियों की उसके पूर्ववर्ती शासकों की नीतियों से भिन्नता को स्पष्ट कीजिये। 15

Explain the difference in the policies adopted by Chandragupta-II from the policies of its predecessor rulers to restore the universality of the Gupta Empire. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

गुप्त साम्राज्य के काल को भारत का स्वर्ण काल माना जाता है क्योंकि यह सांस्कृतिक व राजनीतिक दोनो ही कारणों से समृद्ध था। इनकी समृद्धि का कारण शुरुआती शासकों की नीतियों की जिनमे चन्द्रगुप्त-प्रथम द्वारा वैवाहिक सबंधों से राज्य की समृद्धि प्राप्त की जैसे लिच्छवियों की राजकुमारी से विवाह किया तथा समुद्रगुप्त द्वारा विजय अभियानों से साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किंतु चन्द्रगुप्त ने अपने साम्राज्य स्थापना और विस्तार हेतु नई नीतियों का प्रयोग किया जिसमें वैवाहिक संबंध, सैन्य अभियान, सांस्कृतिक नीति का व्यापक प्रयोग किया जिससे पूर्व समुद्रगुप्त की अयोग्य शासक था, से गुप्तों की प्रतिष्ठा को क्षति पहुँची।

→ वैवाहिक संबंध

↳ • उसने कुबेर नाग से विवाह किया

• अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटकों से किया

• कदंब वंश से भी वैवाहिक संबंधों का पता चलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सैन्य अभियान → शक शासक - रुद्रसिंह को पराजित किया

मालवा, सौराष्ट्र क्षेत्र में भी विजय की जानकारी मिलती है

सांस्कृतिक → धार्मिक सहिष्णुता की नीति - अफगा युद्ध भी विलेन ...वे शैव व इनके बौद्ध धर्म वालों से भी सेवा ली जाती थी

अतः चन्द्रगुप्त-II की नीति उपर्युक्त मामलों में अपने पूर्ववर्ती शासकों से भिन्न होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) "सल्तनत काल में विकसित भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन से प्रभावित न होकर तत्कालीन समय की उपज था।" स्पष्टीकरण कीजिये।

"The Bhakti movement developed in the Sultanate period was not a product of the Bhakti movement of South India but a product of the time." Explain.

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का विस्तार पूर्वमध्यकाल में माना गया। वहीं रामानंद को उत्तर-दक्षिण भक्ति आंदोलन की कड़ी के रूप में देखते हुए उत्तर में प्रसार हेतु उत्तरदायी माना जाता है। किंतु इनके इतिहासकारों द्वारा अलग-2 ~~कल्पना~~ विचार दिये गए हैं, युसुफ हुसैन का माना है कि पहले भक्ति एक व्यक्तिगत मामला थी किंतु इस्लाम आने से यह संप्रदाय के रूप में उभरी। यह इस्लाम से प्रभावित ही मानी गई है, जिसमें व्यक्ति व समानता का विकास हुआ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वहीं तारानंद इसे सूफी विचारों से प्रेरित मानते है।

मुस्कान हबीब इसकी उपज आर्थिक क्षेत्र से मानते है कि नवीन अर्थव्यवस्था से ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव इसी व्यवस्था से नानक, कबीर इत्यादि एकेश्वरवादी आंदोलन का आधार तैयार किया।

डेविड किन्सले इसे पितृसत्ता के विरुद्ध मानते है। यह विरोध की प्रवृत्ति व डेविड कस्ले की खोज था जैसे मीराबाई, लल्लेश्वरी अक्का महादेवी आदि ने अतिनिर्भिक किया।

अन्य विचार
यह सामंती शोषण के विरुद्ध आम लोगों की भावना की अभिव्यक्ति था वहीं कुछ इसे इस्लाम के विरुद्ध हिन्दू धर्म की रक्षा मानते है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) तराइन के युद्ध ने 'राजपूत शक्ति के अपरिवर्तनीय पतन के युग' का सूत्रपात कर दिया। टिप्पणी कीजिये।

The war of Tarain initiated the 'era of irreversible decline of Rajput power'. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह तराइन का युद्ध ही था जिसने भारत में इस्लामी शासन की नींव जमी थी ये दो युद्ध हुए इनमें राजपूतों की तेलना व सामाजिक व्यवस्था को पतन का मुख्य कारण माना जाता है

पूर्वमध्यकाल में केन्द्रीय सत्ता का ~~सम्बन्ध~~ अस्तित्व नहीं था राजपूत कबीलाई समाजों की तरह राज्य चलाते थे स्वयं को चन्द्रवंशी व सूर्यवंशी मानते तथा राज्य को दैविक सिद्धांतो के ~~प्रोक्षि~~ मानते थे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

युद्ध के बाद इस्लामी सत्ता के केन्द्रीकरण का विकास हुआ विनिर्माण प्रभाव अभी, शब्दप्रवाह आर्थिक क्रियाओं इसलामी पर पड़ा।

अतः तराइन युद्ध ने ही राजपूत शक्ति के अपरिवर्तनीय पतन के युद्ध का सूत्रपात हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) प्रारंभिक मध्यकाल में विकेंद्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था के स्वरूप पर टीका कीजिये।

Comment on the nature of decentralized administrative system in the early medieval period.

प्रारंभिक मध्यकाल सामंती काल था। जिसमें भूमि सबंधों पर ही स्पष्ट व्याख्या की जाती थी

इसमें विकेन्द्रीकृत प्रशासन व्यवस्था थी। राज्य द्वारा सामंतों को भूमिदान, ब्राह्मणों को भूमि दान किया जाता वह राज्य में प्रशासन हेतु भी उत्तरदायी माने जाते थे।

छोटे-छोटे उपसामंती प्रकार की व्यवस्था थी जिसमें वंशानुगत प्रशासन चलाने की व्यवस्था की जाती थी। पूर्व कालीन के सीमित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

केन्द्रीकरण की बात पर व्यवस्था
पूर्ण रूप धारण कर चुकी थी
प्रशासन की जिम्मेदारी
सामंतों की होती थी
भी जनता
क्रूर व अनैतिक व्यवस्था का
प्रयोग करते थे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(d) जहाँगीर पर अकबर की धार्मिक नीति से पलायन का आक्षेप कितना तर्कसंगत है?

How rational is the attack on Jahangir for escaping from Akbar's religious policy?

अकबर ने हिन्दू प्रजा व राजपूतों का समर्थन प्राप्ति हेतु उदार व सहिष्णु धार्मिक नीति का सूत्रपात किया इसके प्रमुख लक्ष्य है

→ जजीया कर समाप्ति
→ तीर्थ कर समाप्ति
→ राजपूतों से वैवाहिक संबंध
→ प्रशासन में उच्चे पद देना
→ इबादत खाना निर्माण
→ 1578 में पद सभी धर्मों हेतु खोलना
→ दिन-ए इलाही व सुलह-ए कुल की स्थापना

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु अकबर के बाद जहाँगीर
शाह के धार्मिक नीति पर अपेक्षित
ध्यान नहीं दिया गया। वह
राजकाज व आमोद-विलास में
अधिक उलझा रहा तथा
शासन की विशिष्ट कमजोर
व्यवस्था के दायरों में ही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद कृषि संबंधों की प्रकृति में आए बदलावों की चर्चा कीजिये। 15

Discuss the changes in the nature of agricultural relations after the establishment of the Delhi Sultanate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिल्ली सल्तनत की स्थापना से केन्द्रीकरण के तत्वों का सूत्रपात हुआ।

इल्तुतमिश द्वारा राजस्व एकत्रीकरण करने हेतु इक्ता व्यवस्था की शुरुआत हुई इसमें इक्तादार द्वारा ~~[illegible]~~ पर्याप्त के केन्द्र हेतु रखा जाता था वहीं स्रोत पहले भूमि दान होने से कर व्यवस्था अस्पष्ट प्रकार की थी

अलाउद्दीन खिलजी द्वारा भूमि माप करवाया गया। तथा भूमाप की इकाई बिस्वा रखी गयी जो बिघा को 1/20 भाग थी ~~[illegible]~~ मसाहत व्यवस्था कहलाई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह कृषि सुधार सेना को ध्यान मे रखकर किया गया था नाकि जन कल्याण को।

मोहम्मद बिन तुगलक ने कृषि सुधार हेतु अलग विभाग की स्थापना की। तथा उत्तम फसलो को उगाने की सलाह दी। कर की दर को ½ कर दिया गया। तथा कृषको हेतु कृषि ऋण की व्यवस्था भी की जिसे सोंधार कहा जाता था। इब्नबतुता बताता है कि सुल्तान उत्तम फसलों की खेती हेतु प्रयास करता था।

फिरोज शाह तुगलक ने बागानों की कृषि को बढावा दिया जिसनें 1200 बागान

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लगाने की बात करता है वहीं गेहूं की जगह गन्ना, गन्ने की जगह खजूर उगाने की सलाह दी जाती है।

सिकंदर लोदी द्वारा कृषि हेतु उदार नीति अपनाई गई इसमें अकाल के दौरान लगान माफ करने की व्यवस्था की गई।

अतः पूर्व मध्यकाल की विकेन्द्रीकृत व्यवस्था विकेन्द्रीकृत व्यवस्था के स्थान पर केन्द्रीकरण से कृषि क्षेत्र में अपेक्षित बदलाव स्पष्ट दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) सल्तनतकालीन विकसित हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालिये तथा इनके प्रमुख लक्षणों को भी दर्शाइये। 20

Throw light on the gradual development of the developed Hindu-Islamic architecture of the Sultanate period and highlight its main features. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सल्तनत काल से पूर्व स्थापत्य की ट्रैबिएट शैली होती थी जिसे बीम-शहतीर शैली कहा जाता था। किंतु इस्लामी शासन आने से आर्कुवेट शैली आई जिसके वास्तविक मेहराब व गुम्बद बनाए जाने लगे।

शुरुआती समय में स्थापत्य में कारीगरों की कमी होने से भारतीयों का ही प्रयोग इस्लामी स्थापत्य हेतु किया कि इसी काल स्थापत्य की हिन्दू इस्लामी शैली का विकास हुआ।

इसमें ईंटों को जोड़कर मेहराब बनाने की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोरिया की गई किंतु वास्तविक मेहराब का निर्माण बलबन के मकबरे में ही किया गया। यहीं स्पष्ट रूप से मेहराब व गुम्बदों का निर्माण में अलाई दरवाजा मील का पत्थर है।

इसी के साथ हिन्दू प्रतीकों का प्रयोग भी व्यापक स्तर पर स्थापत्य कला में चलता रहा जैसे

- कुतुब मीनार पर सजावट हेतु घंटी स्वास्तिक का प्रयोग किया गया

- ज्यामितीय आधार पर मेहराबों का निर्माण व लाल-बीम मिश्रण शैली का प्रयोग
  - कुव्वत-उल इस्लाम मस्जिद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- गयासुद्दीन के मकबरे में गुम्बद के शिर्ष पर कमल की आकृति का प्रयोग।

- सैयद-लोदी काल में मकबरों पर स्तम्भों के ऊपर छतरी का प्रयोग किया गया।

- मकबरों के शिर्ष पर आमलक व कलश का प्रयोग।

यह प्रक्रिया मुगल काल में भी इसी रूप में चलती रही जो हमें फतेहपुर सिकरी में दिखती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation